

प्रेत वली
वीर ॥५॥



अथप्रेतवत्यार्चनमाहः॥ ॥ हापांजाकिफं १या
जाथुयावहासासःप्रेतमूर्तिदयके जवलाहातिनं
॥ खड्ग ॥ खवलाहातीनं ॥ पाश ॥ जोनके ॥ हं
ग्व २ मिरवाद्युये ॥ को गो ॥ १ ॥ स्मृतु तय ॥ डायामेतये
हाकुहामोया सतय ॥ पालुया ॥ हस्यंतय ॥ खैंग्व
१ हाकुकापद्यकु ॥ प्वाथसतय ॥ मा ॥ म्वा ॥ हसतय
॥ जवलाहातिस ॥ हीतय ॥ खवस ॥ थतय ॥ जव

तुतिस ॥ दुदुतय ॥ खवतुतिस ॥ लंखतये ॥ थतेवी
जतये ॥ प्रेतलिङ्गस ॥ मेसयाहस ॥ दक् ॥ ताला ॥ द्
कु २ तय ॥ अस्धातु ॥ लुचकि ॥ बहचकि ॥ लुप
ले ॥ बहपले ॥ पंचरत्न ॥ दशपत्र ॥ सहितनं ॥ द्वा
॥ लाभा ॥ अजिक ॥ से ॥ सो ॥ नुग ॥ ही ॥ कनि
वस्त्रांकचा ॥ वद्याकचा ॥ चिकंधलिह ॥ चखप्य
॥ सहितन ॥ माकतालत्वातकाव ॥ प्रेतस्थापना

याय॥ कलश॥ सद्यं॥ मत॥ पंचगव्यं॥ पात्र॥ था
पिं॥ दिग्वलि॥ किरं॥ सफुर॥ माकोसकतां थाप
नायाय॥ थनंलि॥ सुर्याऽर्घ्यं॥ गुरुमंडलदने॥ मं
डलविशर्जन॥ पंचगव्यक्षाय॥ सिद्धतय॥ महनि
फय॥ मंदलथिले॥ समाधि॥ कलश॥ सद्यं मतकि
रं॥ मामकि॥ पूजा॥ थनंलि देवपुजा॥ थनप्रेत
वलि विये॥ स्नानद्वफोल॥ किंज्वसमेतं जोना॥
जप॥ मंत्र॥ धार॥ १०८॥ मंत्रथ्व॥ ॐ भगतिग

धंनुहं हं फट् साहाः॥ थनकिंज्वल॥ प्रेतयातत
य॥ थनध्यान॥ तं च दक्षिणास्पंदिशी॥ प्रेताधि
पति॥ जमराज॥ महाबल॥ पराक्रम॥ कृष्णवर्ण
महाविरं त्रिमुखं चर्द्धं॥ जमदंडधारीं मंहिया
सनस्थितं मेघरूपं ध्यायात्॥ पाशादि॥ धूपनि
रांजन॥ पूषं न्यास॥ वंदक्षिणाधिपतये नमस्वा
हाः॥ वंजमदंडधराय नमस्वाहा॥ वं प्रेताधिप
तये नमस्वाहा॥ वं कृष्णवर्णाय नमस्वाहा॥

वैपाशधराय नमः स्वाहा ॥ वैसर्वप्रेताधिपतय
नमः स्वाहा ॥ वैअगतिदेष तुनां स्वाहा ॥ वैसर्व
प्रेतभयोपस्मारमाय स्वाहा ॥ थनपंचोपचारपू
जा ॥ स्तुती ॥ वैकुरितुकृष्णवर्णमहाक्रोठं वज्र
मूढलकरि तर्जनी पाशधरंचैव जमराजं न
मामिह ॥ दक्षिणो सर्वप्रेताधिपति सर्वभयदे
ष अगतिपिशाचादिशांते र्थ ईदं वलिगृह २
ख २ खादि २ ॥ वैआहुं फट् स्वाहा ॥ थनपरिमा

नथ्ये पूजा ॥ पूर्यन्तास ॥ वै अस्मत् कुले मृताय नमस्वा
हा ॥ ओं अग्निय स्वाहा ॥ वै मातां मह कुले स्वाहा ॥ वै सु
सर्वप्रेतेभ्यो स्वाहा ॥ वै वंधूवर्ग कुले स्वाहा ॥ वै अकुले
जातदन्दाय स्वाहा ॥ वै सिंह व्याघ्र हताय स्वाहा ॥ वै अग्नि
दग्धाय चौर हताय स्वाहा ॥ वै अनेग मृताक्षुधा तृषा
भूटप्रेटपिशाचेभ्यो स्वाहा ॥ वै रौरवनरकेश्व तपनि
नरक गताय स्वाहा ॥ वै नरकेषु च गता गतिव्यूष
शुयोनि गताय स्वाहा ॥ वै द्विपादरीक्ष भूमिस्था पी

तरी नामभ्य स्वाहा ॥ वै प्रतिवसं मृताय रुरुश्वगुरु
वंसयभ्यो स्वाहा ॥ पंचोपचार पूजा लाक्षा घंटा
वादनस्तुती ॥ नीलयात्रीयक योनिश्च प्रेतदेवा
सुरानरा उतिरी भवकांतारं त्वं प्रेतं प्रणमामि हे
॥ ॥ धनस्नान जाकि लंघशथुनाव पूजा ॥ ओं प्रे
ते सर्वशं चर्चिकाय प्रेतभयनाशाय यजमानस्य
आयु आरोक्षेणैश्वर्य प्राप्तेर्थं सर्वप्रेतभयनिवासा
र्थं ॥ इदं वलिरुधिरमत्समांस दधी क्षार सर्वोप

करशासहिताय अगति देवशांति ॐ आहुं फ
 द्वाहा ॥ यधर्म ॥ दायहायके ॥ ॐ एकवृक्ष
 त्वादि ॥ ॥ ॐ देवसुरत्यादी ॥ धनस्तुति वै आ
 हुं ब्रह्म तं भ पर्यंत देव ऋषि पितृ मानवाययके
 चित्त सवर माया दत्त न ता यन नृया मायांतु सर्वसं
 जप्ता तत्त्वार्थ विमुक्ति अस्पृता तस्य नार्द प्रेतस्य
 महोक्त जत्वापिन विक्षाते राणा प्रेत सिरो दे त्वं वा
 माया शिरसि मुक्तयतिर्थ संवापि अगद्वतिसि

त आदि गधादा धन त्वं प्रेतं प्रणामामि हे ॥ ॥
 सताक्षर ॥ चक्र पूजा ॥ मंडल थिले कितने वि
 शर्जन ॥ चित्त पूजा ॥ शुभम् ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

२ श्रीखण्ड २ रूप केशर १	मिहा २	स्व नक्षत्र १
२ कृक २ कलि १	नक्षि २	क्षी धा १
२ गुं गु २ रथो ते सप्त भाग	शुं क २	षयो धी टा १
२ अघुर २ मिसे नृप गुल ॥	आल २	दं धा मिता १
२ केवरी १ अम	रुम २	रुते
२ देव दाम १	नक्ष २	
	रुग २	

